कालमेघ "एन्ड्रोग्राफिस पेनिकुलेटा वाल नीस."

विशेषतायें एवं लाभ:

* कालमेघ में एण्ड्रोग्राफोलिड एवं कालमेघिन (2.5 प्रतिशत तक) पाया जाता है।
* इसका उपयोग रक्त विकार, यकृत वृद्धि, पेचिश, अतिसार, कौलरा, बुखार, मधुमेह, कफ, गले के छालों, टोंसिल की समस्या, चर्म रोग, मलेरिया आदि में किया जाता है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

* इसकी कृषि हेतु उत्तम जल निकासी युक्त बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त है।

प्रसारण:

* इसका प्रसारण बीज, लेयरिंग अथवा कलम द्वारा किया जाता है।
* प्रति हेक्टेयर 2 कि.ग्रा. बीज छिड़काव पद्धति से बोया जाता है, जो 70-80 प्रतिशत तक अंकुरित होता है। अंकुरण आठ से बारह दिनों में हो जाता है।
* कलम द्वारा पौध तैयार करने हेतु 10 से 15 से.मी. की, तीन गांठो युक्त कलम को पोलीथीन की थैली अथवा क्यारी में लगाया जाता है।
* कलम की एक गांठ उपर रखते हुए 9 से.मी. तक कलम को मिट्टी में दबाया जाता है। 7 से 15 दिनों में 70-80 प्रतिशत तक कलमों में फुटान शुरू हो जाती है।
* 6 सप्ताह के पौधों को 15 x 15 से.मी. पर लगाया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण:

* एक फसल में दो-तीन बार खरपतवार निकालने एवं गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है।

सिंचाई:

* शुरूआत में 10-15 दिनों पर तत्पश्चात 25-30 दिनों के अंतर पर सिंचाई की जानी चाहिए, पूरी फसल में दो से चार सिंचाई की आवश्यकता होती है।

कटाई:

* फूल लगना प्रारम्भ होने पर एण्ड्रोग्राफोलिड तत्व की मात्रा सर्वाधिक होती है अत: पहली कटाई इसी समय करनी चाहिए (पौध स्थानान्तरण के 90 से 120 दिन पश्चात)।
* दूसरी कटाई प्रथम कटाई के 60 से 70 दिन पश्चात् करनी चाहिए। कटाई पश्चात् उपज को 7-8 दिनों तक छाया में सुखा कर संग्रहित करना चाहिए।

उपज:

* तकरीबन 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर शुष्क उत्पाद प्राप्त होता है।

संकलन:
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005